एकलव्य का प्रकाशन



अक्कड़-बक्कड़



बच्चों के खेल-गीत





संकलन : मनोज साहू 'निडर'
चित्रांकन : प्रीति सलूजा

भाषा शिक्षण में बाल-गीतों की उपयोगिता

भाषा केवल एक-दूसरे से अपनी बात कहने का माध्यम नहीं है। उसकी मदद से बच्चे एक कल्पनाशील व कल्पनातीत दुनिया का निर्माण कर सकते हैं; ध्वनि, श्रुति और लय के साथ मिलकर अद्‌भुत व मनोरंजक इमारतें खड़ी कर सकते हैं। बाल-गीत व खेल-गीत भाषा की इस ताकत व बच्चों की सृजनशीलता का परिचय देते हैं, और भाषा के ऐसे लचीले और रूढ़ीध्वंसी उपयोग को प्रेरित करते हैं।

खेल-गीतों का एक सीमित उपयोग और हो सकता है, पढ़ना सिखाने के लिए। चूँकि बच्चे इन गीतों को पहले से ही जानते हैं या अपने माहौल में पाते हैं, उन्हें लिपि में देखकर पढ़ना उनके लिए ज़्यादा आसान है और मज़ेदार भी। कृपया अपने बच्चों को इन गीतों के हर शब्द पर उँगली रखकर पढ़कर सुनाएँ और साथ दिए गए चित्रों पर भी उनसे बात करें। बाकी उन पर छोड़ दें!

अक्कड़-बक्कड़

बच्चों के खेल-गीत

संकलन : मनोज साहू 'निडर'

चित्रांकन : प्रीति सलूजा



एकलव्य का प्रकाशन

अक्कड़-बक्कड़

Akkad-bakkad

बच्चों के खेल-गीत

संकलन : मनोज साहू 'निडर'

चित्र : प्रीति सलूजा, राष्ट्रीय डिज़ाइन संस्थान, अहमदाबाद

पहला संस्करण - नवम्बर 2005 / 3000 प्रतियाँ

90gsm मेपलिथो और 150gsm पल्प कार्डशीट (कवर) पर प्रकाशित

ISBN : 81-87171-64-2

मूल्य : 15.00 रुपए

प्रकाशक : **एकलव्य**

ई-7/एच आई जी 453

अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016 (म.प्र.)

फोन : (0755) 246 3380, फैक्स : (0755) 246 1703

ई मेल : eklavyamp@mantrafreenet.com



मुद्रक : आदर्श प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, भोपाल, फोन 255 0291, 255 5442

अपनी बात

यह संकलन ग्रामीण अंचल में बिखरे हुए बाल-गीतों व खेल-गीतों को बटोरने का एक छोटा-सा प्रयास है, ताकि आज की भागम-भाग ज़िन्दगी और आधुनिकता के प्रभाव से कमरे में कैद होते बचपन के बीच माटी की गन्ध में रचे-बसे ये पारम्परिक गीत कहीं गुम न हो जाएँ। इनमें अधिकतर गीत ऐसे हैं जिन्हें हम पीढ़ी-दर-पीढ़ी गाते और सुनते चले आ रहे हैं। कुछ ऐसे गीत भी हैं जो वर्तमान से प्रभावित हुए हैं। ये बे-तुके, ऊट-पटाँग और अर्थहीन गीत बच्चों की कल्पनाशीलता और रचनात्मकता का नमूना तो हैं ही, साथ ही बच्चों में भाषाई कौशल विकसित करने के सशक्त माध्यम भी हैं। यदि इन गीतों को बाल अभिव्यक्ति की बुनियाद कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी।

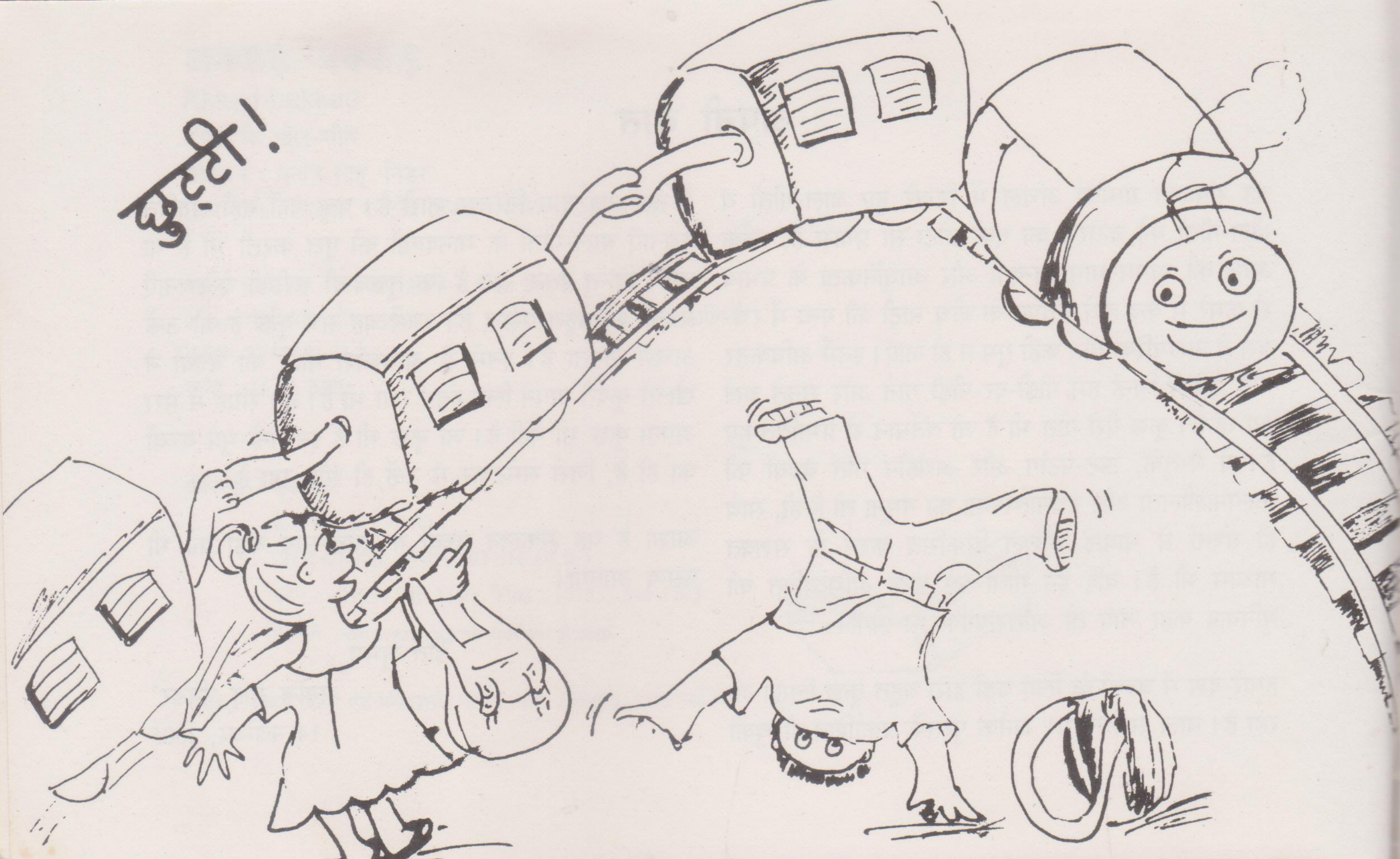
हमारे देश में बच्चों के लिए बड़ों द्वारा बहुत कुछ लिखा जा रहा है। बाल साहित्य पर अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा यह क्रम निरन्तर जारी है। पता नहीं यहाँ संग्रहित रचनाएँ बाल-गीतों के मानदण्डों को पूरा करती भी हैं या नहीं। किन्तु इतना तय है कि तुकबन्दी सरीखी ये रचनाएँ बच्चों को बहुत पसन्द हैं। इनमें वह सब कुछ है जो उन्हें अच्छा लगता है। इनमें से अधिकांश गीतों को बच्चों ने खेलते-कूदते अपने लिए स्वयं रचा भी है। इस संग्रह में मेरा अपना कुछ भी नहीं है। जो कुछ भी है इन नन्हे-मुन्ने बच्चों का ही है, जिसे समेटकर मैं उन्हें ही सौंप रहा हूँ।

आशा है यह संकलन बच्चों के साथ-साथ बड़ों को भी पसन्द आएगा।

इति शुभम्

मनोज साहू 'निडर'

14 नवम्बर, 2005


छुट्टी!

1

रेल का डिब्बा

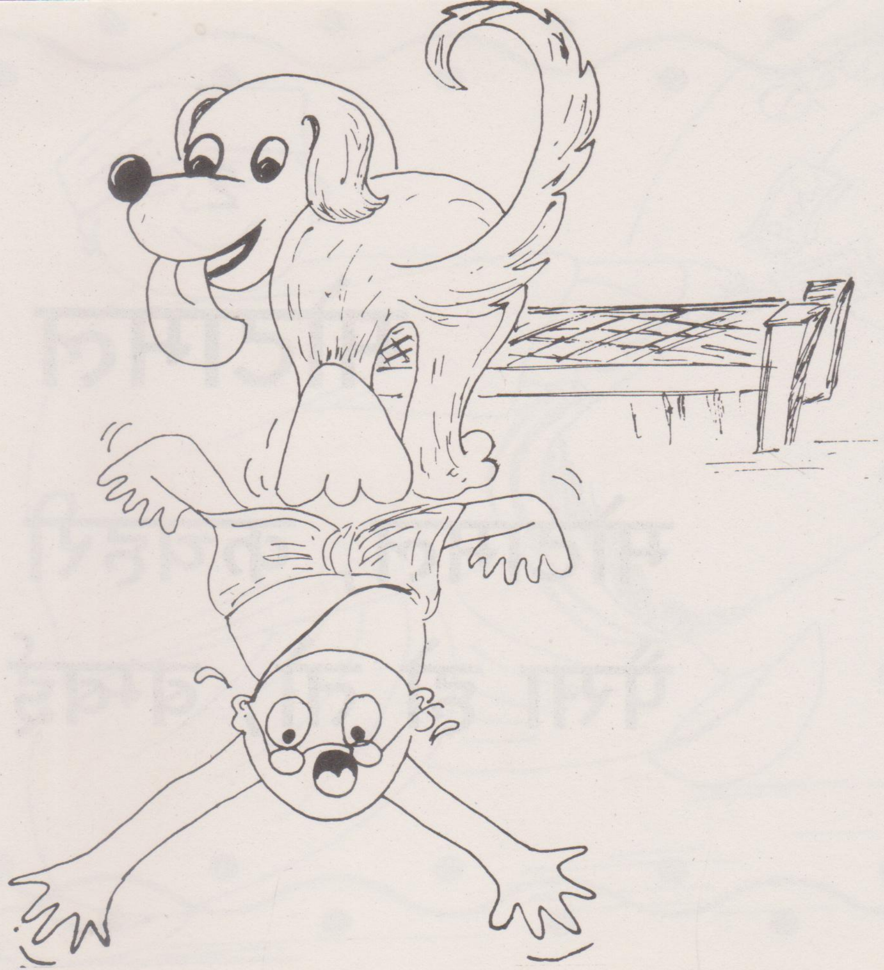
रेल का डिब्बा खाली है।

छुट्टी होने वाली है!


बचत
R.100
R.100

मोटामल

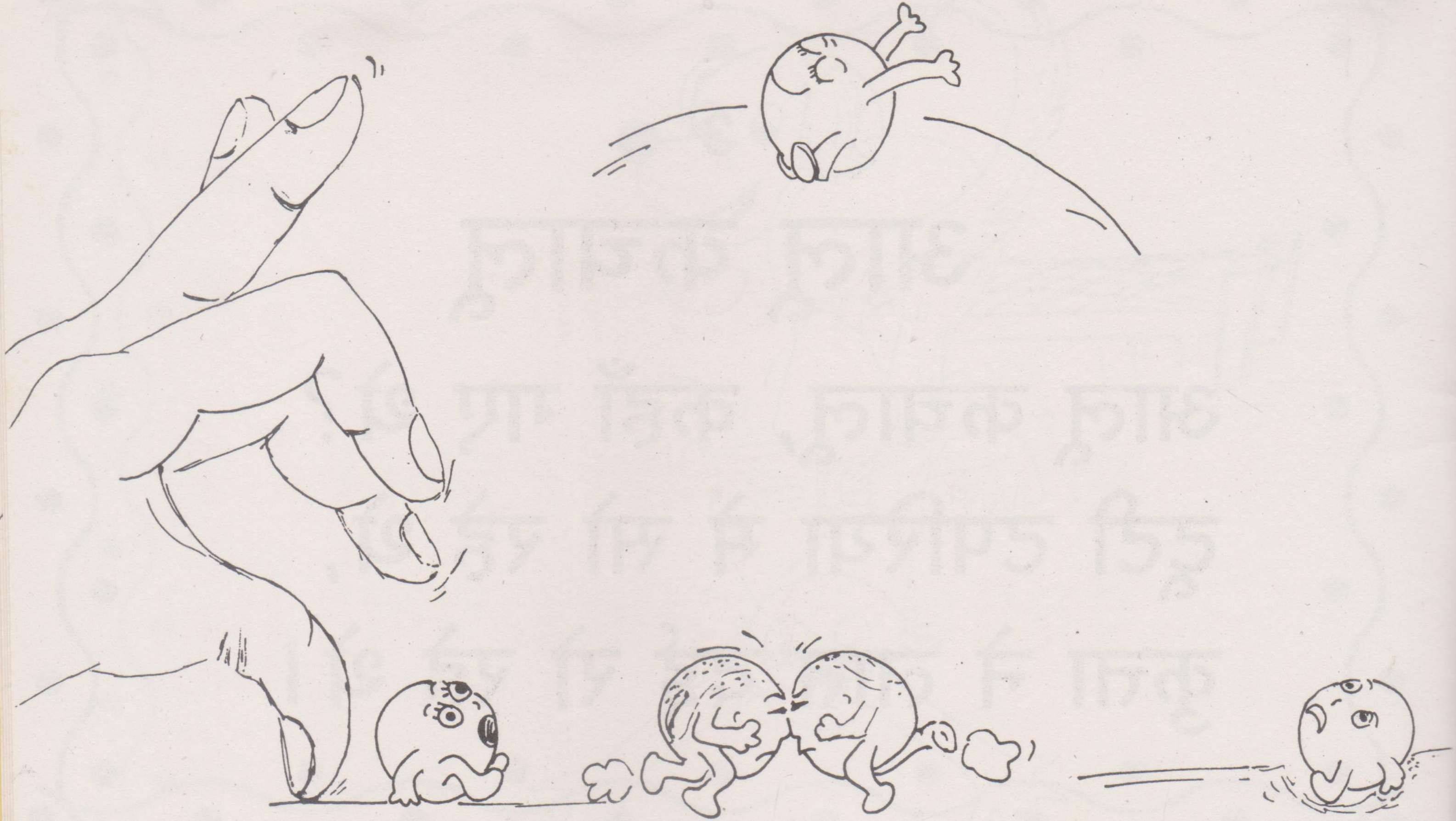
मोटामल, कचहरी चल।
पैसा हो तो, बम्बई चल!



3

आलू कचालू

आलू कचालू, कहाँ गए थे?
टूटी टपरिया में सो रहे थे,
कुत्ता ने लात दई रो रहे थे।



4

कंचे का गीत

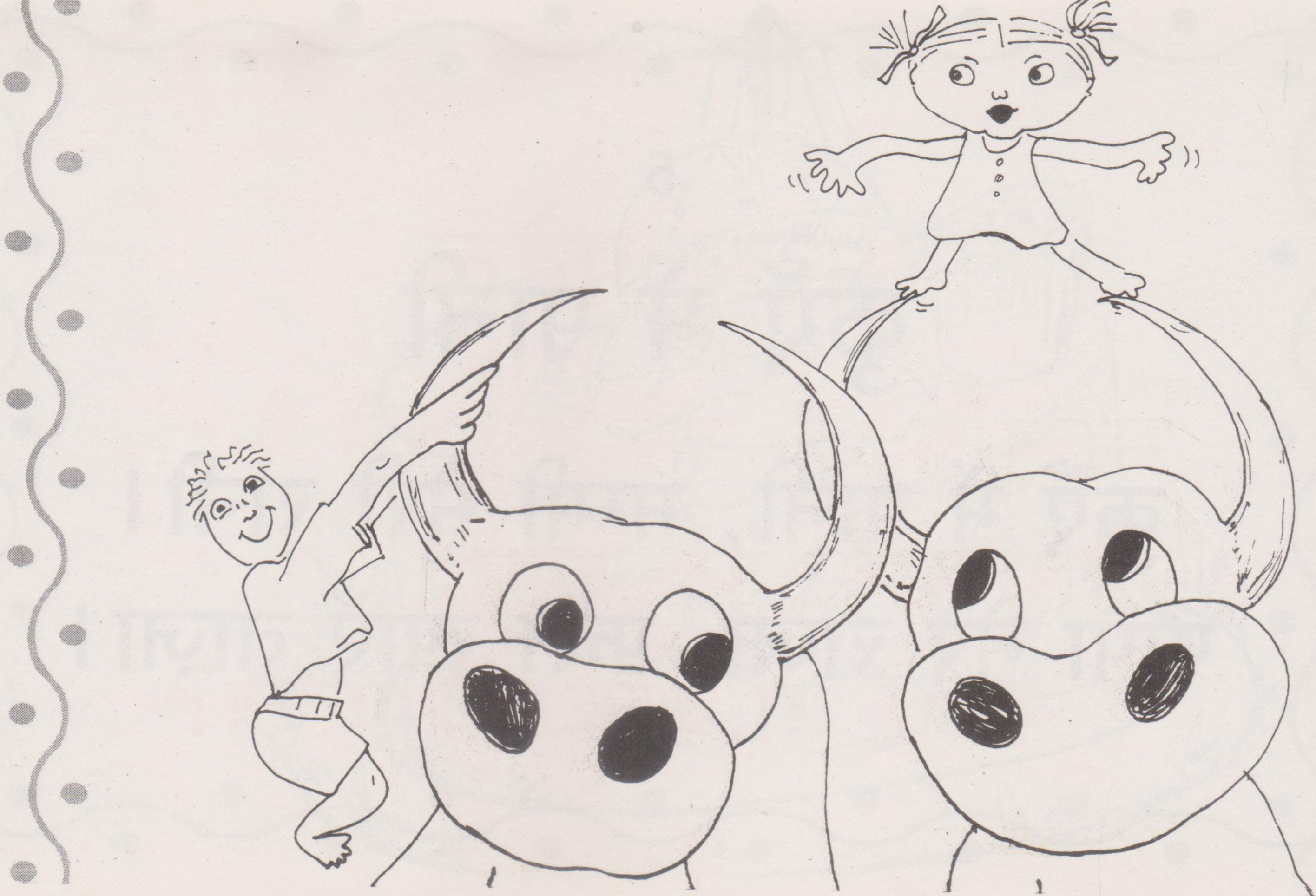
हरी हरावै, लाल जितावै।
नीली-पीली, टक्कर खावै।



5

कुएँ में पानी

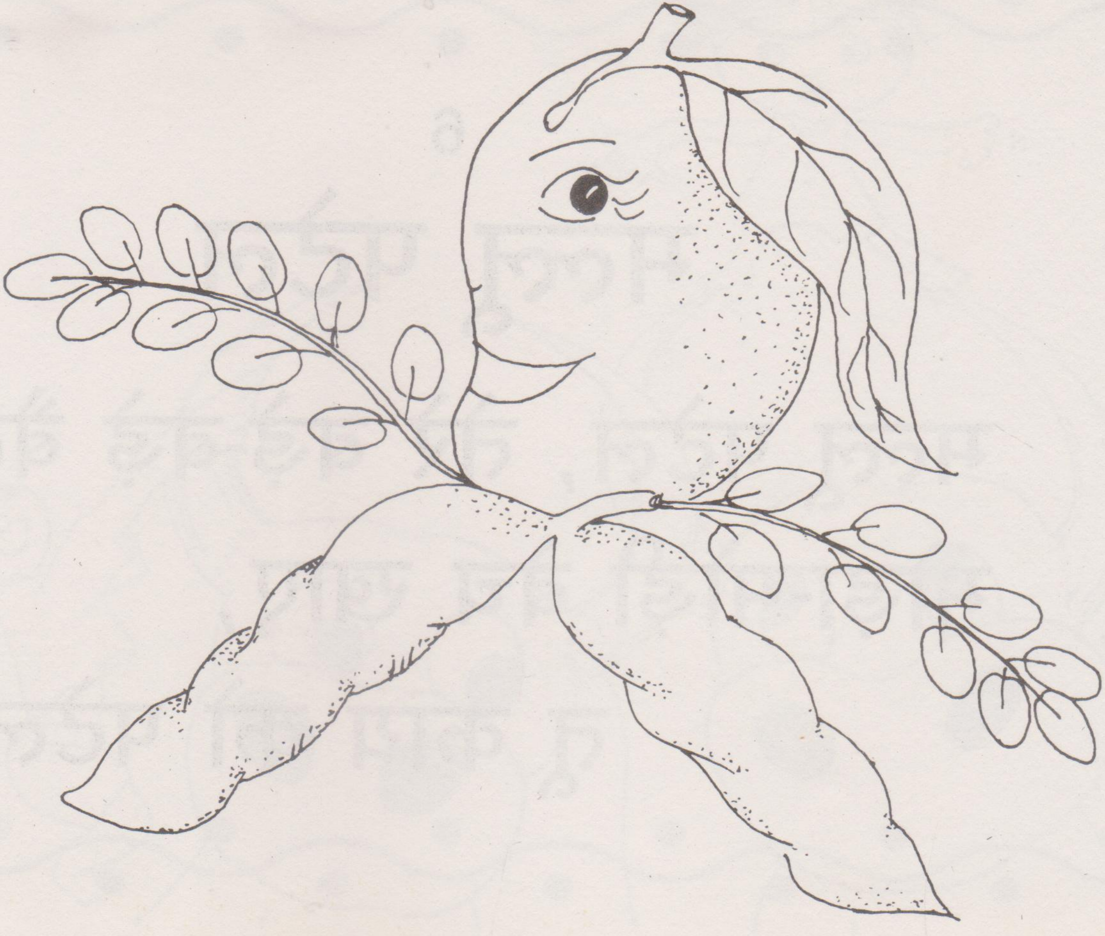
कुएँ में पानी, मम्मी मेरी रानी।
पापा मेरे राजा, फल खाएँ ताज़ा।



6

मल्लू पटेल

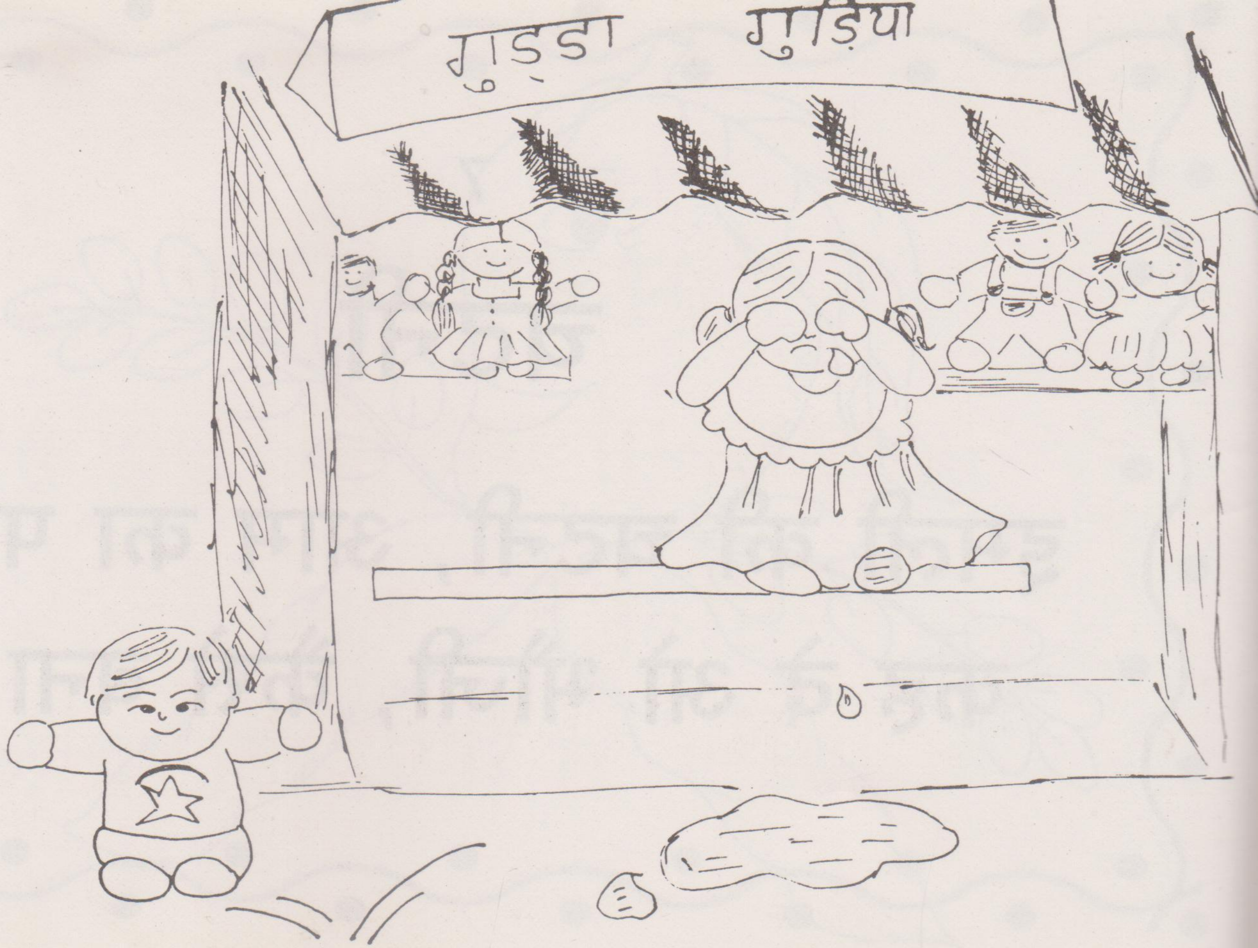
मल्लू पटेल, तेरे बड़े-बड़े बैल!
मोड़ा-मोड़ी बेच खाए,
तू काय को पटेल?



7

चटनी

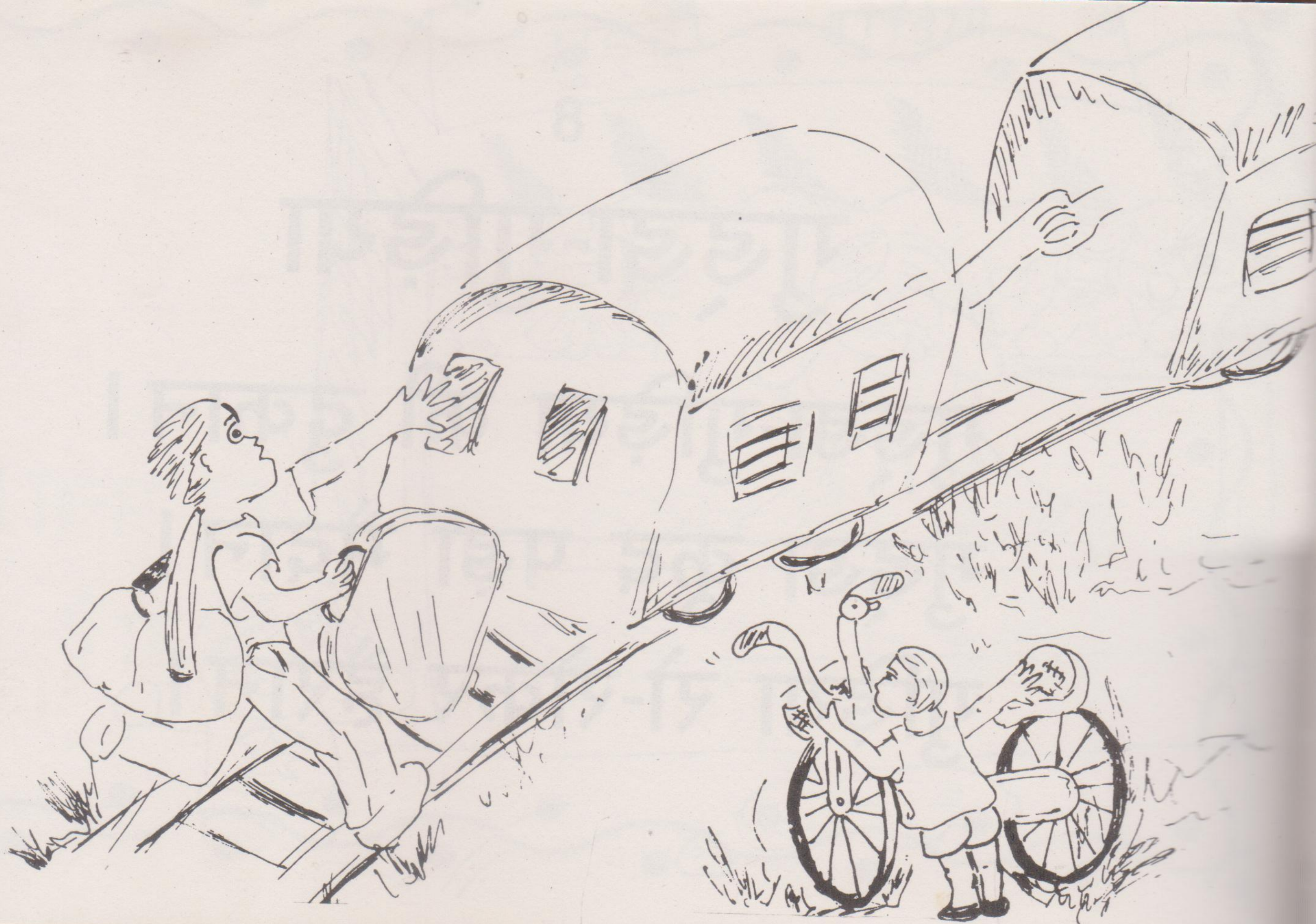
इमली की चटनी, आम का पना।
कह दे ओ भौजी, कैसे बना?


गुड्डा गुड़िया

8

गुड्डा-गुड़िया

गुड्डा-गुड़िया की दुकान।
गुड्डा कूद पड़ा मैदान।
गुड़िया रो-रोकर हैरान।



9

साईकल

काँच की साईकल,
धोखे से टूट गई।
दौड़ मेरे भैया, रेलगाड़ी छूट गई।

घोर घोर रानी !
इतना इतना पानी !!

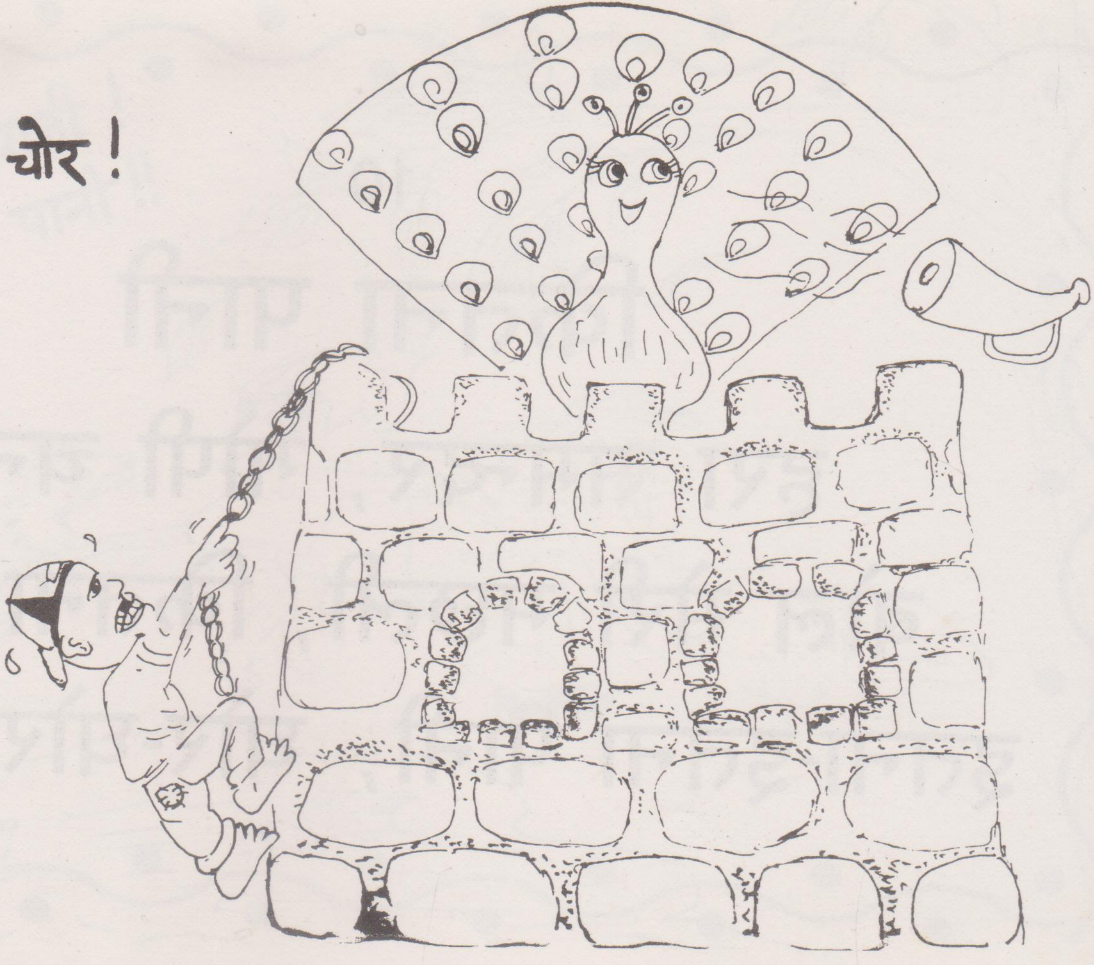


10

कितना पानी

हरा समन्दर, गोपी चन्दर।
बोल मेरी मछली, कितना पानी।
इतना-इतना पानी, घोर-घोर रानी।

चोर - चोर !



11

गल्ला चोर

एक कहानी - बोदा रानी।
गल्ला चोर - खींचे डोर।
बाजे पुंगी - नाचे मोर।


..ऊं ऊं
..चूं चूं

12

एक-दो-तीन

एक-दो-तीन, दादा की मशीन।
दादा बैठा गाड़ी में, दादा के लगी दाढ़ी में।
गाड़ी बोले - चूँ चूँ, दादा रोए - ऊँ ऊँ।



13

टेसू

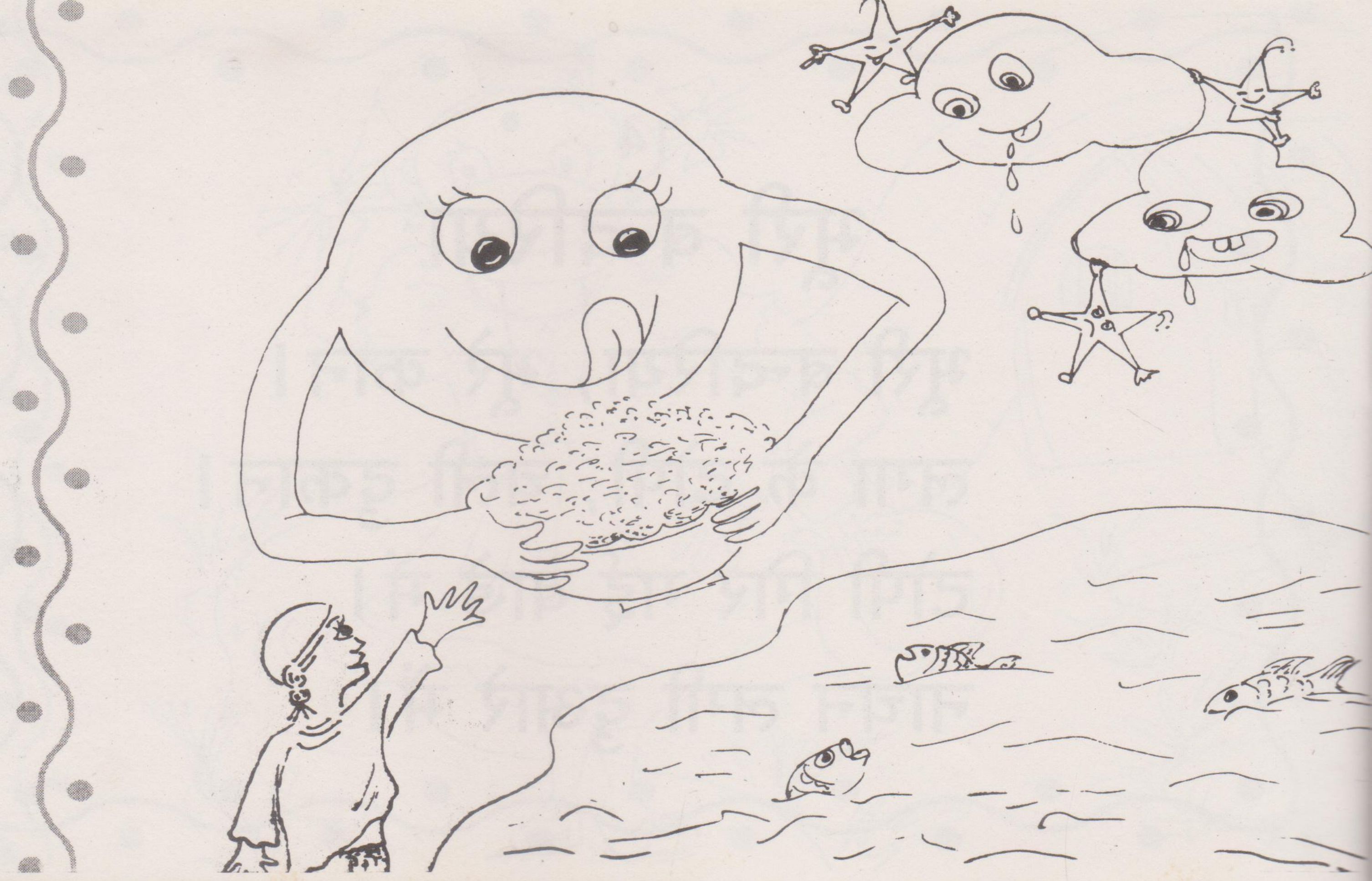
टेसू आया टेसन से,
रोटी खाई बेसन से।
मेरा टेसू यहीं खड़ा,
खाने को माँगे दही बड़ा।



14

भूरी बन्दरिया

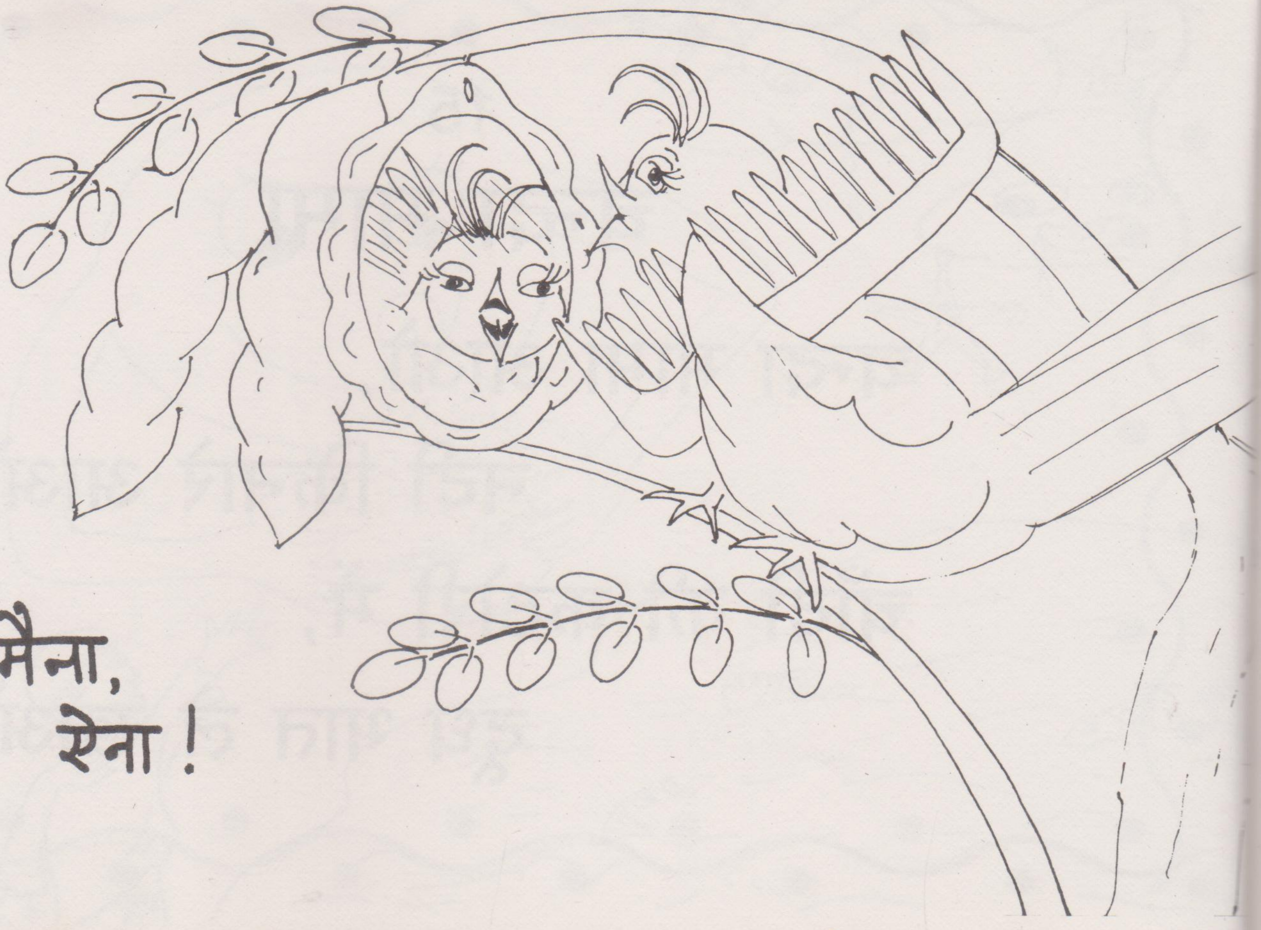
भूरी बन्दरिया, भूरे कान।
लगा के टोपी, चली दुकान।
टोपी गिर गई बाड़े में।
नाचन लगी दुआरे में।



15

चन्दा मामा

चन्दा मामा आओ,
नदी किनारे आओ।
चाँदी की कटोरी में,
दूध भात ले खाओ।

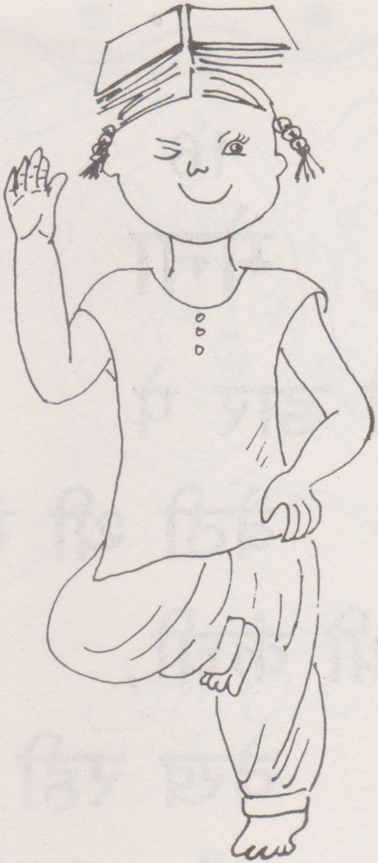


मैना,
ऐना!

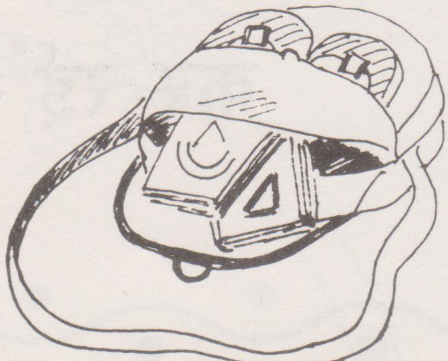
16

मैना

इमली की डार पे
बैठी थी मैना।
कर रई थी कंघी,
देख रही थी ऐना।



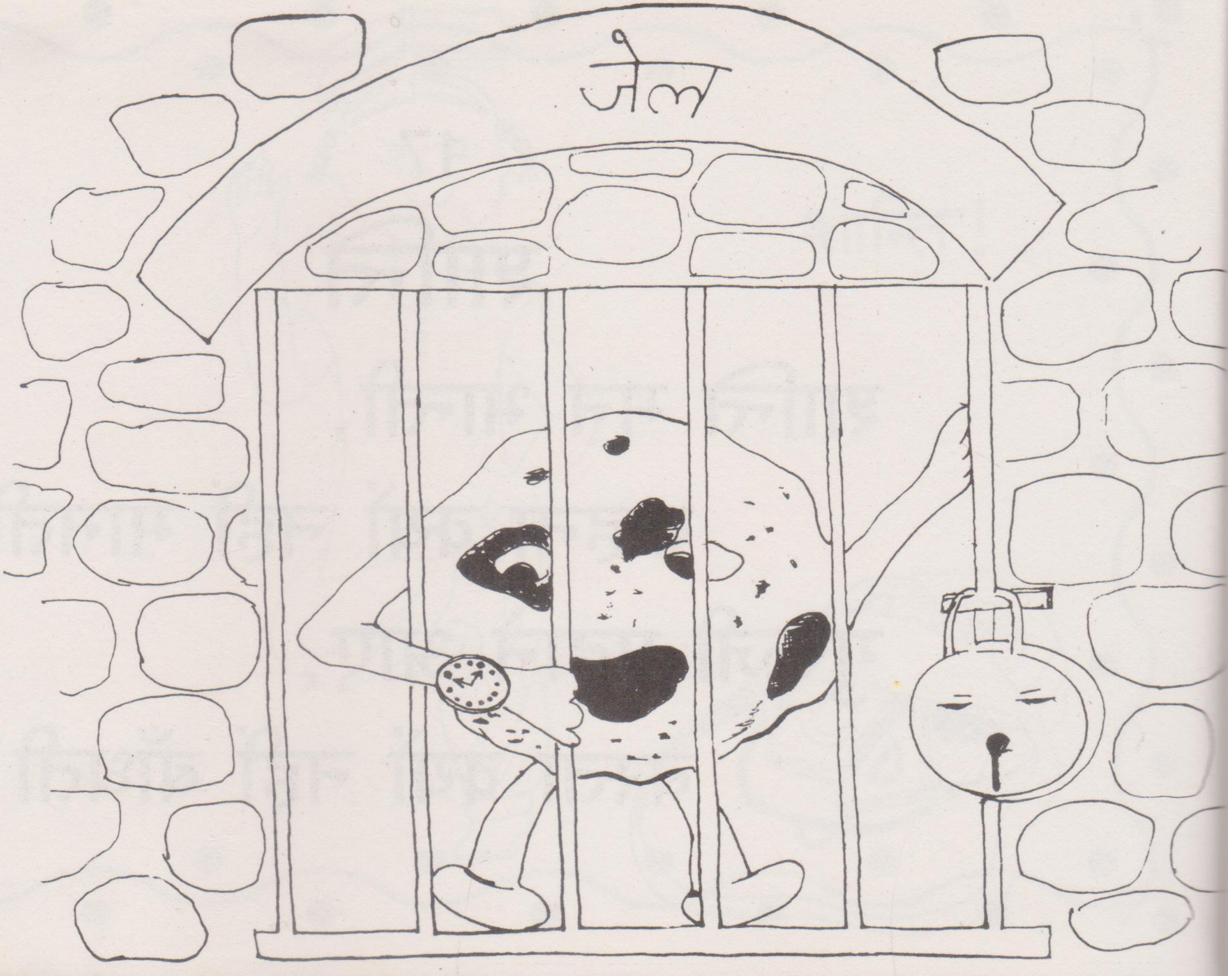
शान्ति!



17

शान्ति

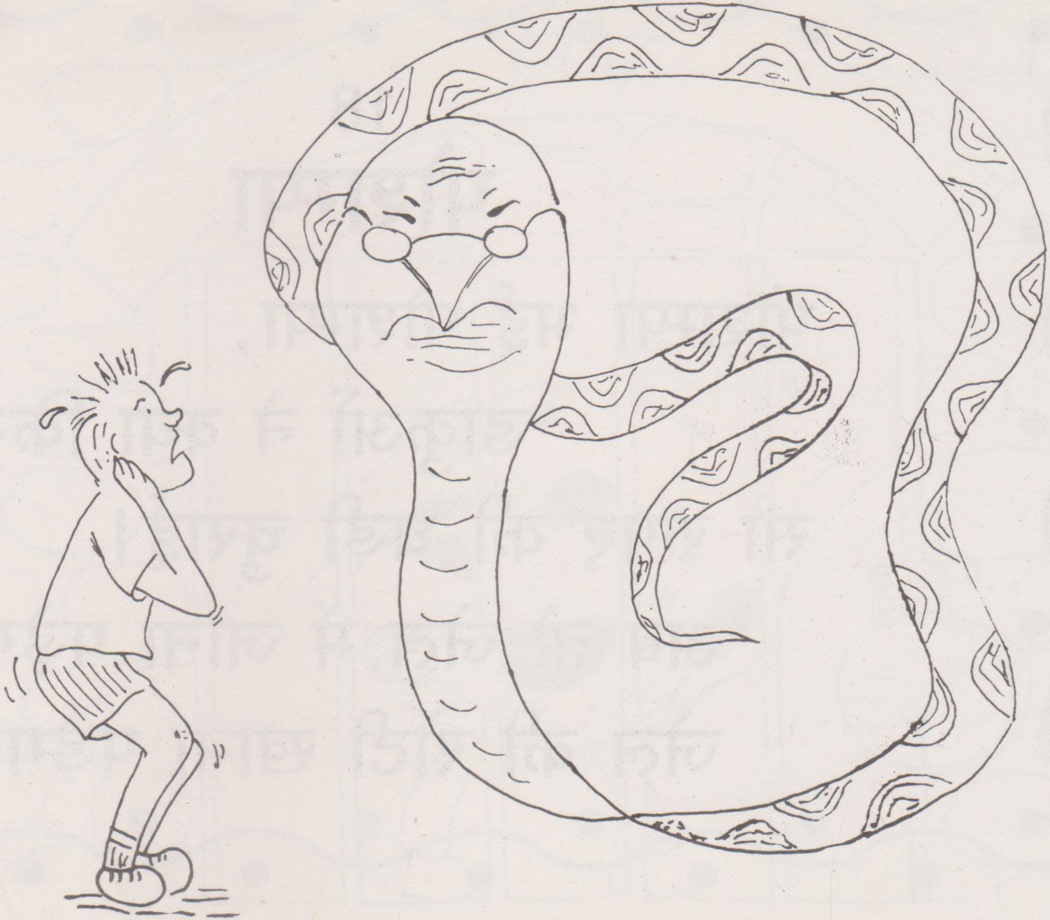
शान्ति मन भान्ती,
कहना क्यों नहीं मानती?
गुरुजी पढ़ाने आए,
बस्ता क्यों नहीं बाँधती?


जेल

18

पोशम्पा

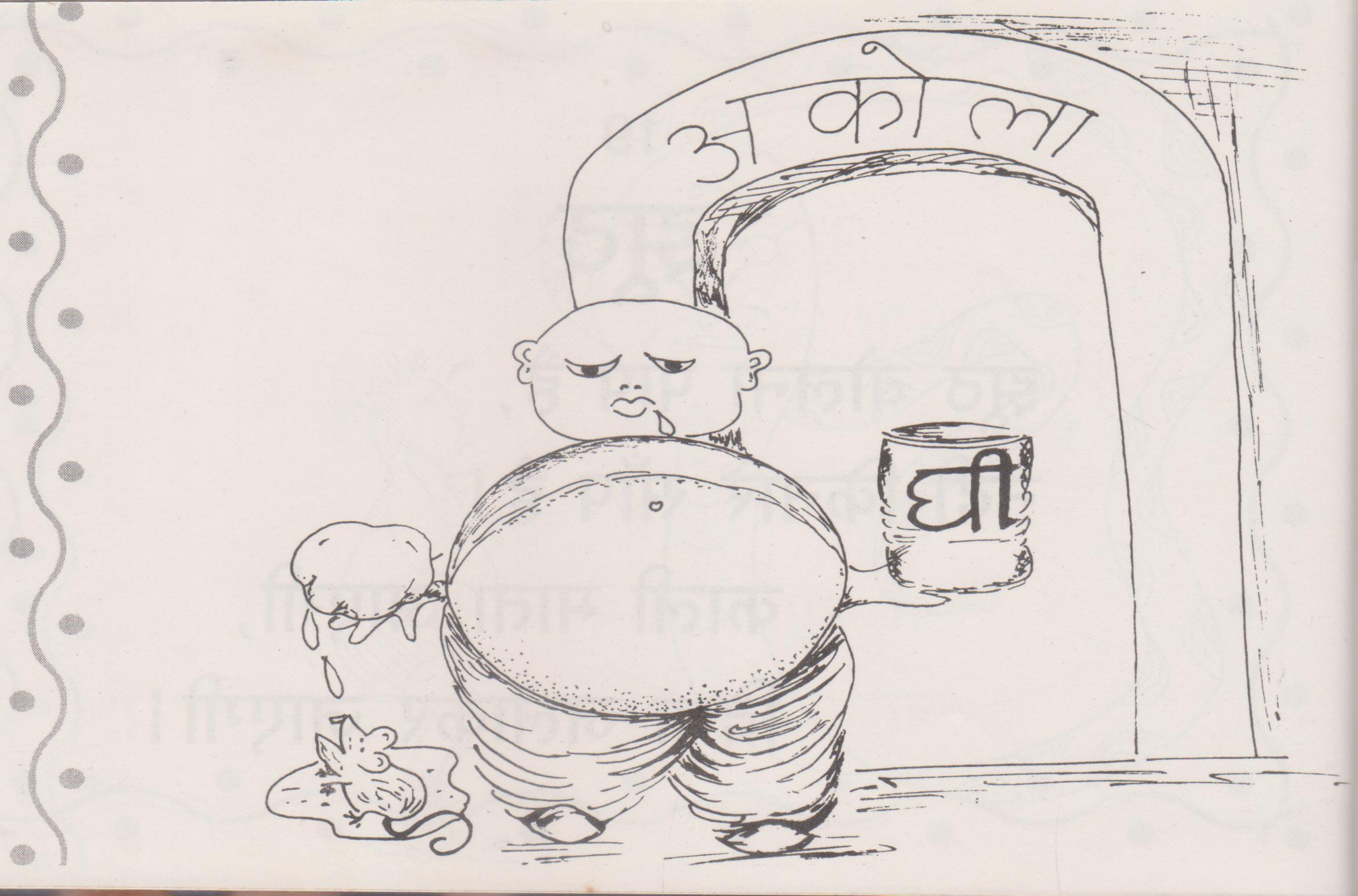
पोशम्पा भई पोशम्पा,
डाकुओं ने क्या किया
सौ रुपए की घड़ी चुराई।
अब तो जेल में जाना पड़ेगा,
जेल की रोटी खाना पड़ेगा।



19

झूठ

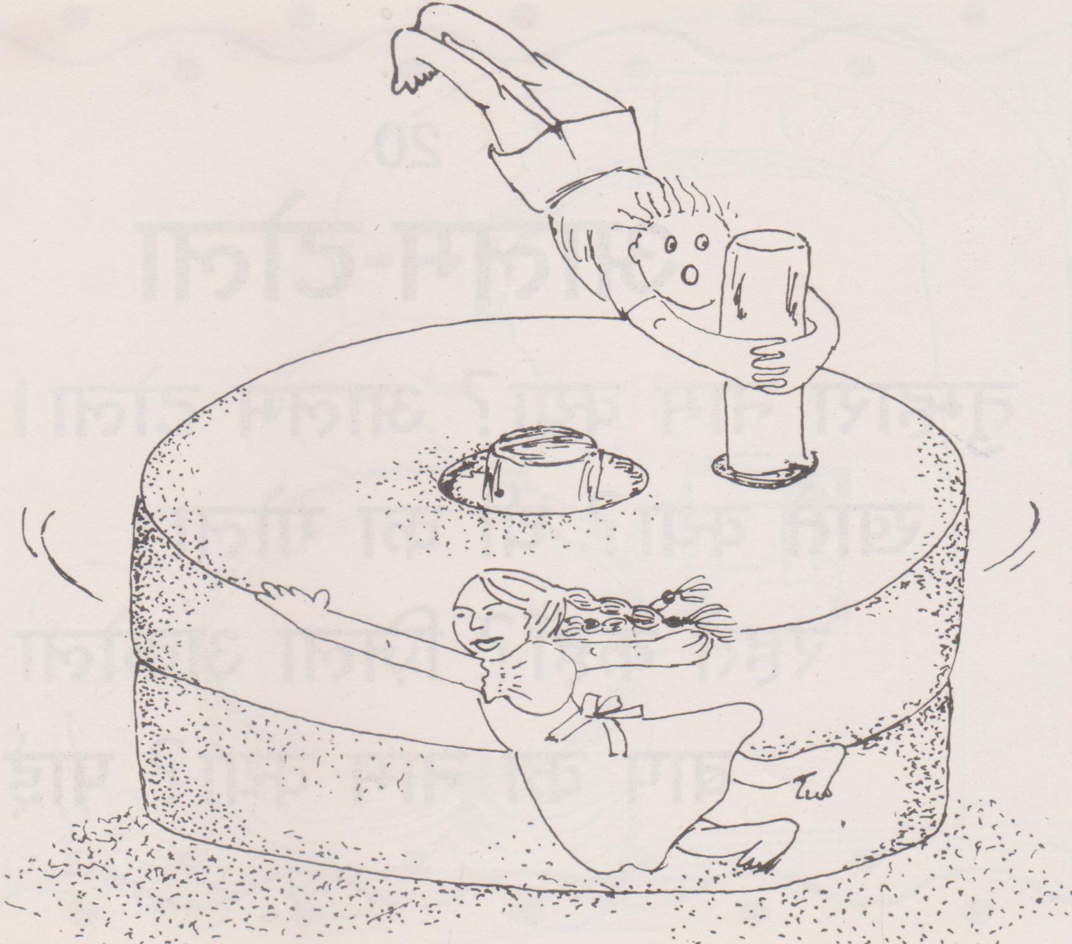
झूठ बोलना पाप है,
नदी किनारे साँप है।
काली माता आएगी,
दिया जलाकर जाएगी।


अकोला
घी

20

आलम-टोला

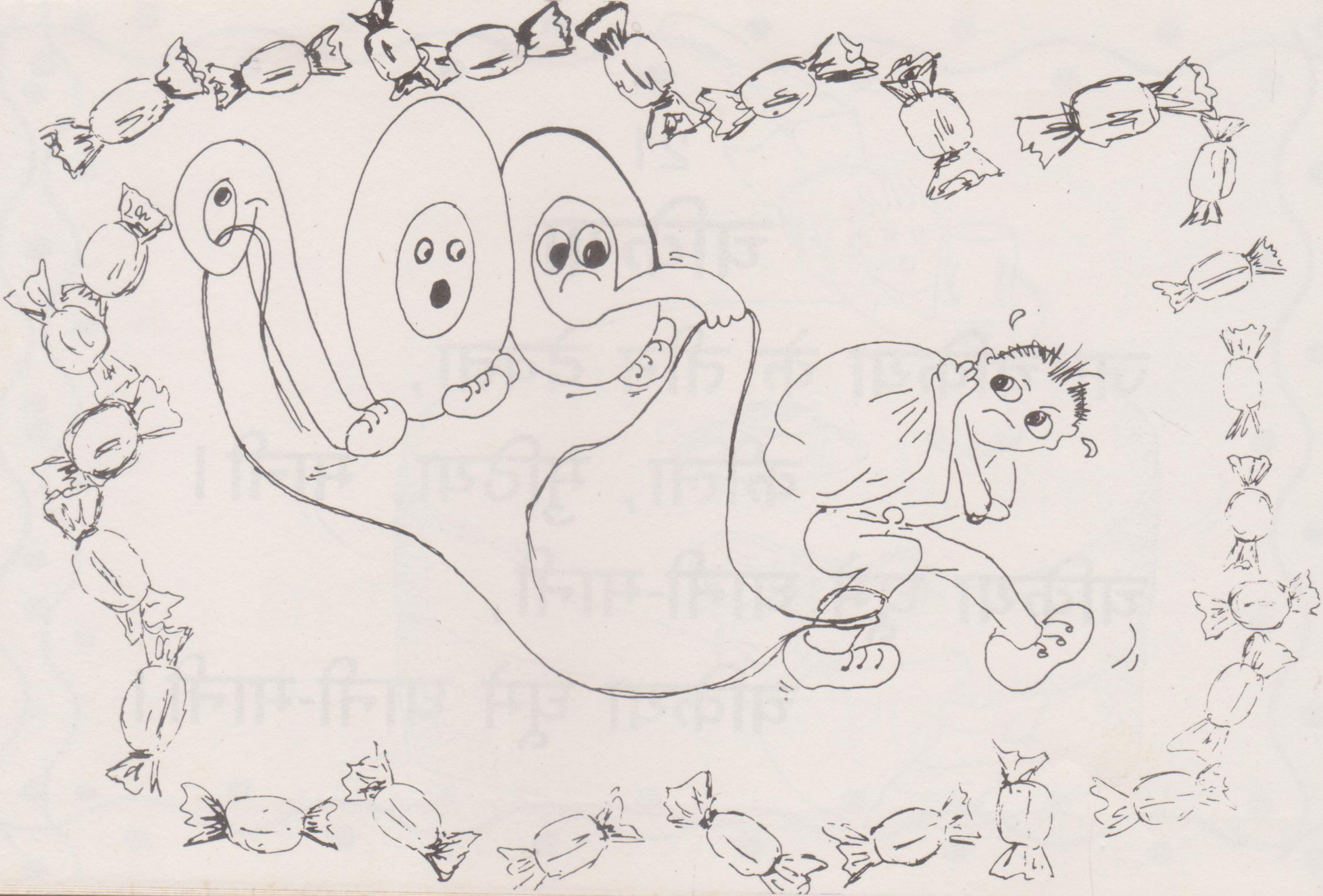
तुम्हारा नाम क्या? आलम टोला।
खाते क्या? घी का गोला।
रहते कहाँ? ज़िला अकोला।
बाप का नाम क्या? पाई पोला।



21

चकिया

जा चकिया के तीन देवता,
कीला, मुठिया, मानी।
चकिया घूमे घानी-मानी,
चकिया घूमे घानी-मानी।



अक्कड़-बक्कड़

अक्कड़-बक्कड़, बम्बे बो,
अस्सी नब्बे, पूरे सौ।
सौ में लगा धागा,
चोर निकलकर भागा।

चोर को पकड़ लो,

रस्सी से जकड़ लो।

चोर ने माँगी माफी,

उसको दे दो टॉफी।

मनोज साहू 'निडर'

मनोज साहू 'निडर' युवा शिक्षक व साहित्यकार हैं और शासकीय प्राथमिक शाला बछवाड़ा में पढ़ाते हैं। बाल-केन्द्रित शिक्षा में उनकी गहरी रुचि है।

सम्पर्क : ग्राम बछवाड़ा, वि. ख. बाबई
ज़िला होशंगाबाद, म.प्र.

प्रीति सलूजा

प्रीति सलूजा बिलासपुर, छत्तीसगढ़ की निवासी हैं और फिलहाल अहमदाबाद स्थित राष्ट्रीय डिज़ाइन संस्थान में अध्ययनरत हैं। बच्चों के लिए क्रियात्मक खिलौने, कठपुतलियाँ आदि बनाने और किताबें डिज़ाइन करने में उनकी विशेष रुचि है। एकलव्य में अपने ग्रीष्मकालीन इन्टर्नशिप के दौरान उन्होंने इस किताब पर काम किया।

सम्पर्क : खिलौना डिज़ाइन विभाग
राष्ट्रीय डिज़ाइन संस्थान
पालड़ी, अहमदाबाद, गुजरात

एकलव्य का परिचय

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। यह पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य है ऐसी शिक्षा जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं, जब बच्चों को स्कूली समय से बाहर, घर में भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। इसमें किताबें तथा पत्रिकाएँ एक अहम भूमिका निभाती हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में किया है। बच्चों की पत्रिका **चकमक** के अलावा **स्रोत** (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर) तथा **संदर्भ** (शैक्षिक पत्रिका) नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान, बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्री आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य म.प्र. में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, देवास, इन्दौर व शाहपुर (बैतूल) में स्थित केन्द्रों तथा हरदा, उज्जैन और परासिया (छिंदवाड़ा) में स्थित उपकेन्द्रों के माध्यम से कार्यरत है।

और पढ़ो तुम और बढ़ो तुम
मनमानी तुक खूब गढ़ो तुम
मस्तकलन्दर बनकर बन्दर
ऊँचे पेड़ खूब चढ़ो तुम

- निरंकार देव सेवक

ISBN : 81-87171-64-2

मूल्य : 15.00 रुपए